सूरह — एक कहानी

सूरह मुहम्मद

मुहम्मद

पूरा सफ़र — दो रास्ते, और देने की आज़माइश —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 47 • 38 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्लज़ीन कफ़रू व सद्दू 'अन सबीलिल्-लाहि अज़ल्ल अ'मालहुम

1. जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, उसने उनके अमल अकारत कर दिए।

या अय्युहल्-लज़ीन आमनू इन तन्सुरुल्-लाह यन्सुर्कुम व युसब्बित अक़्दामकुम

7. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वो तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

अ फ़-ला यतदब्बरूनल्-क़ुरआन अम 'अला क़ुलूबिन अक़्फ़ालुहा

24. तो क्या वो क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते, या दिलों पर ताले पड़े हैं?

हा अन्तुम हा-उला-इ तुद्'औन लि-तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्-लाह

38. सुन लो! तुम वो लोग हो जिन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने को बुलाया जाता है।

वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ुक़रा

38. और अल्लाह बे-नियाज़ है और तुम ही मोहताज हो।

व इन ततवल्लौ यस्तब्दिल क़ौमन ग़ैरकुम सुम्म ला यकूनू अम्सालकुम

38. और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो वो तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा, फिर वो तुम जैसे न होंगे।

दो रास्ते, शुरू में ही एलान

बेटा, ये सूरह ख़ुद नबी ﷺ के नाम पर है, और ये इंसानियत को **दो में बाँट कर** खुलती है — हर एक के लिए एक आयत।

'**अल्लज़ीन कफ़रू व सद्दू 'अन सबीलिल्लाहि अज़ल्ल अ'मालहुम** — जिन्होंने **कुफ़्र** किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से **रोका** — उसने उनके **अमल अकारत** कर दिए।'

बेटा, '**अज़ल्ल अ'मालहुम**' — उसने उनके अमल को **भटका** दिया, राह भुला दी। एक अच्छे कामों का क़ाफ़िला निकलते हुए और कभी किसी मंज़िल पर न पहुँचते हुए सोचो। **उन्होंने बनाया, दिया, हासिल किया — और उस में से कोई किसी मंज़िल तक न पहुँचा।**

'वल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़िल 'अला मुहम्मदिन — और जो ईमान लाए और नेक अमल किए और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा — **कफ़्फ़र 'अन्हुम सय्यिआतिहिम व अस्लह बालहुम** — वो उन से उनकी **बुराइयाँ मिटा** देगा और उनकी **हालत सँवार** देगा।'

बेटा, मोमिनीन को दिए **दो तोहफ़े** ग़ौर कीजिए: उनके गुनाह मिटा दिए जाते हैं, **और** उनका 'बाल' — उनका हाल, उनके मुआमलात, उनकी सूरत-ए-हाल — ठीक कर दी जाती है। **सिर्फ़ माज़ी की मग़फ़िरत नहीं, बल्कि हाल में बेहतरी।**

'ज़ालिक बि-अन्नल्-लज़ीन कफ़रुत्-तब'उल्-बातिल व अन्नल्-लज़ीन आमनुत्-तब'उल्-हक़्क़ मिर्-रब्बिहिम — ये इस लिए कि जिन्होंने कुफ़्र किया उन्होंने **बातिल** की **पैरवी** की, और जो ईमान लाए उन्होंने अपने रब की तरफ़ से **हक़** की पैरवी की।'

बेटा, फ़र्क़ बस इतनी सादगी से बयान हुआ: **हर एक किसी न किसी की पैरवी कर रहा है। कोई अकेला नहीं चलता।** सिर्फ़ सवाल ये है कि **तुम किसके पीछे चल रहे हो।**

अगर तुम अल्लाह की मदद करो

फिर सूरह एक ऐसे मुआशरे को मुख़ातिब करती है जिसे अपना दिफ़ा करना पड़ा — मदीना, हमले के नीचे, जिसने सिर्फ़ ईमान लाने के सिवा कुछ न किया था। और उस जद्दो-जहद के ज़ब्त और उस के अंदर ज़रूरी रहमत का ज़िक्र करने के बाद, अल्लाह एक ऐसा वादा देते हैं जिसे मोमिनीन तब से ले कर चल रहे हैं:

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू इन तन्सुरुल्लाह यन्सुर्कुम व युसब्बित अक़्दामकुम** — ऐ ईमान वालो! **अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे, तो वो तुम्हारी मदद करेगा** और तुम्हारे **क़दम जमा** देगा।'

बेटा, पहले जुमला 'इन तन्सुरुल्लाह' समझिए — अगर तुम अल्लाह की **मदद** करो। **अल्लाह को किसी मदद की ज़रूरत नहीं**; वो अल-क़विय्य, ताक़तवर हैं।

इसका मतलब है **उसके दीन की मदद**, उसकी किताब की, उसके रसूल के तरीक़े की — **हक़ के लिए खड़ा होना जब वो तुम्हें कुछ क़ीमत दे।**

और बदले में वादा की गई **दो चीज़ें** देखिए। **पहली** — 'यन्सुर्कुम', वो **तुम्हारी** मदद करेगा। बेटा, एक हैरत-अंगेज़ लेन-देन: तुम अपनी छोटी सी ताक़त से उसके काम में मदद करते हो, **और जहानों का रब तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे मुआमलात में दाख़िल हो जाता है।**

दूसरी — और ये अक्सर नज़र-अंदाज़ होती है, बेटा — '**युसब्बित अक़्दामकुम**': वो **तुम्हारे क़दम जमा** देगा, तुम्हें साबित-क़दम बनाएगा, तुम्हें फिसलने से रोकेगा।

बेटा, **ये फ़तह से भी बड़ा तोहफ़ा है।** क्योंकि एक मोमिन के लिए सब से बड़ा ख़तरा शिकस्त नहीं — **ये अपनी जगह खो देना है**: भटक जाना, ठंडा पड़ जाना, वो शख़्स बन जाना जो *पहले नमाज़ पढ़ा करता था।* अल्लाह उस शख़्स से वादा करते हैं जो उसके दीन की ख़िदमत करता है कि **वो उसे साबित रखेंगे।**

और यूँ एक अमली उसूल निकलता है, बेटा: **अपने ख़ुद के ईमान को साबित रखने का सब से पुख़्ता तरीक़ा ये है कि किसी न किसी तरह अल्लाह के दीन की ख़िदमत करो** — एक बच्चे को एक सूरह सिखाओ, एक मस्जिद की मदद करो, किसी जूझते हुए की मदद करो, फ़ायदेमंद इल्म फैलाओ। **तुम सिर्फ़ उनकी मदद नहीं कर रहे; तुम अपनी साबित-क़दमी ख़रीद रहे हो।**

जन्नत की नहरें, और खौलता पानी

फिर सूरह क़ुरआन में जन्नत के सब से तफ़सीली बयानों में से एक देती है: '**मसलुल्-जन्नतिल्-लती वु'इदल्-मुत्तक़ून** — उस बाग़ का बयान जिसका ख़ौफ़-ए-ख़ुदा वालों से वादा किया गया:'

'फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्-मा-इन ग़ैरि आसिन — उस में **पानी** की **नहरें** हैं जो ख़राब नहीं होतीं, बासी नहीं होतीं — व अन्हारुम्-मिल्-लबनिल्-लम यतग़य्यर

त'अ्मुह — और **दूध** की नहरें जिनका **मज़ा कभी नहीं बदलता** — व अन्हारूम्-मिन ख़म्रिल्-लज़्ज़तिल्-लिश्-शारिबीन — और **शराब** की नहरें, पीने वालों के लिए लज़ीज़ — व अन्हारूम्-मिन 'असलिम्-मुसफ़्फ़ा — और **साफ़-शुदा शहद** की नहरें — व लहुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्-समरात — और उन के लिए उस में हर क़िस्म के **फल** — व मग़्फ़िरतुम्-मिर्-रब्बिहिम — और उनके रब की तरफ़ से **मग़फ़िरत।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए **हर नहर उस ऐब से बयान हुई जो उस में नहीं है।** इस दुनिया में पानी बासी हो जाता है। दूध फट जाता है। इस दुनिया की शराब अक़्ल को धुँधला देती और ज़िंदगियाँ बर्बाद कर देती है — जन्नत की शराब **बिना नशे और बिना नदामत** के ख़ालिस लुत्फ़ है। यहाँ शहद में मिलावट होती है — वहाँ वो '**मुसफ़्फ़ा**' है, छान कर साफ़।

बेटा, यही जन्नत का अंदाज़ है: **हर चीज़ जिसे आप यहाँ लुत्फ़ उठाते हैं उसके साथ एक ऐब जुड़ा होता है** — वो ख़राब होती है, ख़त्म होती है, नुक़सान पहुँचाती है, मायूस करती है। **वहाँ, लज़्ज़त ऐब हटे हुए आती है।**

और फिर तज़ाद, सिर्फ़ एक जुमले में: 'क-मन हुव ख़ालिदुन फ़िन्-नारि व सुक़ू मा-अन हमीमन फ़-क़त्त-अ अम्'आ-अहुम — क्या (वो) उस जैसा है जो **आग** में हमेशा रहेगा और जिसे **खौलता पानी** पिलाया जाएगा जो उनकी **आँतें काट** देगा?'

दिलों पर ताले

और अब, बेटा, एक ऐसी आयत जिसे हर मुसलमान को अपने दिल में टाँग लेना चाहिए — इस किताब के साथ हमारे ताल्लुक़ के बारे में पूरे क़ुरआन की सब से अहम आयतों में से एक:

'**अ फ़-ला यतदब्बरूनल्-क़ुरआन अम 'अला क़ुलूबिन अक़्फ़ालुहा** — **तो क्या वो क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते? या दिलों पर ताले पड़े हैं?**'

बेटा, '**तदब्बुर**' — 'दुबुर' से, किसी चीज़ का अंजाम या नतीजा। इसका मतलब किसी चीज़ में **गहराई से देखना**, उसे उसके मानी और उसके नताइज तक फ़ॉलो करना। सिर्फ़ सरसरी न पढ़ना, महज़ तिलावत न करना — **ग़ौर करना।**

और ग़ौर कीजिए अल्लाह **वाहिद मुतबादिल वज़ाहत** क्या पेश करते हैं: अगर एक शख़्स ये किताब पढ़े और उस में कुछ न हिले, तो **मसला किताब नहीं है। दिल पर एक ताला है।**

बेटा, ये हमें डराना चाहिए। हम में से कितने ने एक पूरी तिलावत ख़त्म की है और कुछ महसूस नहीं किया? मौत के बारे में एक अज़ीम आयत सुनी और सीधे नाश्ते की तरफ़ बढ़ गए?

और वो ताले किस से बनते हैं, बेटा? इसी के आस-पास की आयतें जवाब देती हैं: **हिदायत आने के बाद मुँह मोड़ना, उस चीज़ की पैरवी जो अल्लाह को ना-पसंद है, मुनाफ़िक़त, बिना तौबा के जमा हुए गुनाह।** 'ज़ालिक बि-अन्नहुमुत्-तब'ऊ मा अस्ख़तल्लाह व करिहू रिज़्वानहू फ़-अह्बत अ'मालहुम — ये इस लिए कि उन्होंने उस चीज़ की **पैरवी** की जिसने अल्लाह को **नाराज़** किया और उसकी **रज़ामंदी को ना-पसंद** किया, तो उसने उनके अमल अकारत कर दिए।'

बेटा, और यहाँ उन लोगों के बारे में एक ख़ास तंबीह है जो आधा-अधूरा सुनते हैं: 'व मिन्हुम मंय्-यस्तमि'उ इलैक हत्ता इज़ा ख़रजू मिन 'इंदिक क़ालू लिल्लज़ीन ऊतुल्-'इल्म **माज़ा क़ाल आनिफ़ा** — और उन में से कुछ तुम्हें **सुनते** हैं, यहाँ तक कि जब वो तुम्हारे पास से **निकलते** हैं तो इल्म वालों से कहते हैं: **उसने अभी क्या कहा?**'

बेटा, **वो पूरी महफ़िल में बैठे रहे और एक लफ़्ज़ भी ज़ेहन में रखे बग़ैर निकल गए। ** जिस्मानी तौर पर हाज़िर, पूरी तरह ग़ैर-हाज़िर। जाना-पहचाना लगता है? वो ख़ुत्बा जिसमें हम बैठे रहते हैं जब कि अपनी दोपहर का मंसूबा बना रहे होते हैं; वो नसीहत जो हम स्क्रॉल करते हुए सुनते हैं।

और फिर ख़ूबसूरत तज़ाद: '**वल्-लज़ीनह्-तदौ ज़ादहुम हुदंव्-व आताहुम

तक़्वाहुम** — और जो **हिदायत-याफ़्ता** हैं — वो उन्हें **हिदायत में बढ़ाता** है और उन्हें उनका **तक़्वा** अता करता है।'

बेटा, **हिदायत बढ़ती जाती है।** उसकी तरफ़ ख़ुलूस से एक क़दम लो, और ज़्यादा दिया जाता है। **ताला और चाबी दोनों उसी सिलसिले में बयान हैं: ग़ौर खोलता है, और मुँह मोड़ना बंद करता है।**

तो तदब्बुर कैसे हासिल करें, बेटा? **कम पढ़ो और ज़्यादा सोचो।** एक आयत लो और उस के साथ बैठो। पूछो: *अल्लाह यहाँ **मुझे** क्या बता रहे हैं? इस लाइन की वजह से मेरे हफ़्ते में क्या बदलना चाहिए?* **एक सफ़हा एक हाज़िर दिल से पढ़ा गया एक जुज़ उस से बेहतर है जो एक बंद दिल से पढ़ा जाए।**

देने की आज़माइश

फिर सूरह एक निहायत इंसानी आज़माइश की तरफ़ मुड़ती है — और बेटा, ये हम सब के बारे में एक ना-गवार चीज़ बे-नक़ाब करती है।

'**हा अन्तुम हा-उला-इ तुद्'औन लि-तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाह** — **सुन लो, तुम वो लोग हो** जिन्हें अल्लाह की राह में **ख़र्च** करने को **बुलाया** जाता है — **फ़-मिन्कुम मंय्-यब्ख़ल** — मगर **तुम में** से कुछ **कंजूसी** करते हैं। **व मंय्-यब्ख़ल फ़-इन्नमा यब्ख़लु 'अन नफ़्सिह** — और जो **कंजूसी** करता है वो सिर्फ़ **अपने आप** से कंजूसी करता है।'

बेटा, वो आख़िरी जुमला दोबारा पढ़िए: **कंजूस अल्लाह से नहीं रोक रहा** — अल्लाह 'अल-ग़नियय्', बे-नियाज़ हैं, जैसा आयत फिर कहती है: '**वल्लाहुल्-ग़नियय्यु व अन्तुमुल्-फ़ुक़रा** — और **अल्लाह बे-नियाज़** है, और **तुम मोहताज** हो।'

बेटा, उस पलटाव को महसूस कीजिए। हम समझते हैं कि देने का मतलब है **हम खोते हैं और कोई और पाता है।** क़ुरआन कहता है: **जब तुम देने से इनकार करते हो, वाहिद शख़्स जिसे तुम महरूम कर रहे हो वो तुम ख़ुद हो** — क्योंकि अज्र तुम्हारा

था, और तुमने उसे ठुकरा दिया।

और फिर वो तंबीह जो सूरह को बंद करती है, बेटा, और ये क़ुरआन की सब से संजीदा तंबीहों में से एक है: '**व इन ततवल्लौ यस्तब्दिल क़ौमन ग़ैरकुम सुम्म ला यकूनू अम्सालकुम** — और **अगर तुम मुँह मोड़ोगे, तो वो तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा — और वो तुम जैसे न होंगे।**'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। **अल्लाह के दीन को किसी ख़ास गिरोह की ज़रूरत नहीं।** अगर एक नस्ल काम छोड़ देती है, वो दूसरी ले आएगा — और आयत साफ़ कहती है: **वो तुम जैसे न होंगे।** यानी वो **बेहतर** होंगे: ज़्यादा आमादा, ज़्यादा शुक्र-गुज़ार, ज़्यादा फ़रमाँबरदार।

आता है कि जब ये आयत नाज़िल हुई, सहाबा ने पूछा कि ये बदलने वाले कौन होंगे — और नबी ﷺ ने अपना हाथ **सलमान अल-फ़ारिसी (रज़ि0)** पर रखा और इस मतलब के अल्फ़ाज़ कहे कि वो **उनकी क़ौम, फ़ारसियों** में से होंगे। और बेटा, तारीख़ देखिए: हदीस, फ़िक़्ह और अरबी ग्रामर के उन उलमा का बड़ा हिस्सा जिन्होंने इस उम्मत की ख़िदमत की **उन ज़मीनों से आया।**

तो **इस दीन की ख़िदमत का शरफ़ एक मौक़ा है, मिल्कियत नहीं। ये किसी और को सौंपा जा सकता है।**

और आख़िर के क़रीब एक और आयत, बेटा, जो पूरी दुनिया को नज़र में रखती है: '**इन्नमल्-हयातुद्-दुन्या ल'इबुंव्-व लह्व** — ये दुनिया की ज़िंदगी तो बस **खेल** और **तमाशा** है — व इन तु'मिनू व तत्तक़ू यु'तिकुम उजूरकुम **व ला यस्अलकुम अम्वालकुम** — और अगर तुम ईमान लाओ और अल्लाह से डरो, वो तुम्हें तुम्हारे **अज्र** देगा और **तुम से तुम्हारा माल नहीं माँगेगा।**'

बेटा, नरमी ग़ौर कीजिए: **वो तुम्हारी पूरी मिल्कियत नहीं माँगते। वो एक हिस्सा माँगते हैं — और पूरा अज्र देते हैं।** और वो ठीक जानते हैं कि वो भी हमारे लिए कितना मुश्किल है: '**इंय्-यस्अल्कुमूहा फ़-युह्फ़िकुम तब्ख़लू** — अगर वो **पूरा** माँगें और तुम पर **ज़ोर** दें, तो तुम **रोक** लोगे, और वो तुम्हारी खोटा-

दिली ज़ाहिर कर देता।'

बेटा, ये अल्लाह हमारी कमज़ोरी को कामिल ठीक-तर बयान करते हुए — **और फिर एक ऐसा दीन मुक़र्रर करते हुए जो वैसे भी हमारी गुंजाइश में है। यही रहमत है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. हर कोई किसी न किसी की पैरवी करता है — बातिल या हक़; कोई अकेला नहीं चलता।

2. मोमिन को दो चीज़ें मिलती हैं: माज़ी के गुनाहों की मग़फ़िरत, **और** हाल की हालत की दुरुस्ती।

3. 'इन तन्सुरुल्लाह' — उसके दीन की ख़िदमत आपकी अपनी साबित-क़दमी ख़रीदती है; फ़तह से भी बड़ा तोहफ़ा 'युसब्बित अक़्दामकुम' है।

4. हर जन्नती नेमत उस ऐब के बग़ैर बयान हुई जो यहाँ उस के साथ लगा है — वहाँ लज़्ज़त बिना बिल के आती है।

5. अगर किताब पढ़ कर कुछ न हिले तो मसला किताब नहीं — **दिल पर ताला** है; और चाबी 'तदब्बुर' है: कम पढ़िए, ज़्यादा सोचिए।

6. कंजूस अल्लाह से नहीं, **अपने आप** से रोकता है — वो ग़नी हैं, हम फ़क़ीर।

7. इस दीन की ख़िदमत मिल्कियत नहीं, मौक़ा है — और वो किसी और को सौंपा जा सकता है।

या अल्लाह, हमारे दिलों के ताले खोल दीजिए, हमारे क़दम जमा दीजिए, और हमें उन में से मत बनाइए जो मुँह मोड़ लें और बदल दिए जाएँ। आमीन।